सूर्योदय : 6:30
सूर्यास्त : 5:13
अधिकतम तापमान : 25.0
अधिकतम : 13.0
RNI NO : UPHIN/2010/31173
डाक पंजीकरण संख्या: SSP/LW/NP-422/2014-2016
वर्ष-18 अंक-153 पेज-16
मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, रविवार, 24 नवम्बर 2024
21 जमादियुल-अव्वल 1446 हिजरी

हिन्दी दैनिक

अवधनामा

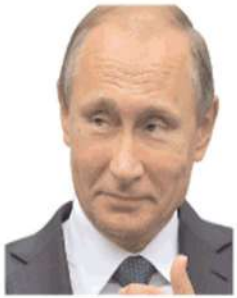

15 राज्यों की 46 विधानसभा और दो लोकसभा सीटों के नतीजे घोषित

हम सुपरपॉवर्ड केयर एरा में प्रवेश कर चुके: जॉ अली खान

अवधनामा ब्यूरो

■ डाक्टर का अपने क्षेत्र में सक्षम होना जरूरी: डॉ. गुलाटी

लखनऊ। एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में आयोजित 15वें राष्ट्रीय स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा सम्मेलन में एरा विश्वविद्यालय के एडिशनल डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन जॉ अली खान ने कांफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कहा कि दुनिया में बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है। कोविड महामारी के बाद स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी बदलाव हुए और स्मार्ट फोन, ई-कॉमर्स जैसी चीजें आम आदमी की पहुंच में आई। दूसरे क्षेत्रों के मुकाबले स्वास्थ्य के क्षेत्र में लोगों की अपेक्षाएं बढ़ी और सरकार भी इस ओर लगातार काम कर रही है। आयुष्मान भारत और ई-संजीवनी पोर्टल जैसी सेवाएं इसका प्रमाण हैं। ई-संजीवनी पोर्टल-टेली मेडिसिन के जरिए चिकित्सकों से कंसल्टेशन की संख्या में काफी तेजी से इजाफा हुआ। जॉ अली खान ने कहा कि हम सुपरपॉवर्ड केयर के युग (एरा) में प्रवेश कर चुके हैं। एरा में हम डिजिटल हेल्थ पर कोर्स शुरू कर चुके हैं और टेलीमेडिसिन पिछले 4-5 सालों से संचालित कर रहे हैं। डिजिटल हेल्थ सोल्यूशन का प्रयोग भी शुरू कर चुके हैं। कोविड महामारी के दौरान हमने आईसीयू में बेडों की संख्या बढ़ाई। हमें इलेक्ट्रिक कोर्स ऑन डिजिटल हेल्थ की इसी क्रम अनुमति मिली। इसके अलावा एरा विवि में हॉस्पिटल फर्नीचर यूनिट, एनीमेशन डिपार्टमेण्ट, एजूकेशनल वीडियो गेम्स डेवलपमेण्ट टीम, बायो मेडिकल इनोवेशन वर्कशॉप आदि संचालित हैं। इसके अलावा आईओटी पेशेंट मॉनीटर के माध्यम से घर पर रह कर मरीज के ब्लड प्रेशर, हृदय गति आदि की जानकारी हॉस्पिटल तक बिना किसी देर के पहुंच सकती है। श्री खान ने बताया कि भविष्य में एआई इनेबल्ड प्रिवेंशन ऑफ बेडसोर्स बनाने की खोजना है। यह एक ऐसा बेड है जो मरीज को दो घण्टे से अधिक समय तक एक ही स्थिति में लेटे रहने पर दूसरी तरफ करवट कराएगा। वहीं जयपुर में महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. गुलाटी ने बताया कि चिकित्सा संस्थान की जिम्मेदारी है कि वह समाज को एक बेहतरीन डाक्टर दे। डाक्टर का अपने क्षेत्र में सक्षम होना जरूरी है ताकि वह मरीजों का सटीक इलाज कर सके। ऐसे बहुत डाक्टर हैं जिन्हें थ्योटिकली स्ट्रॉंग कहा जा सकता है दूसरे शब्दों में कहें कि किताबी डाक्टर। डाक्टरों को व्यवहारिक डाक्टर बनाना होगा जो मरीज की बीमारी का सही डायग्नोस कर उसका इलाज करें ताकि उसे जल्द रोग से राहत मिले। डॉ. गुलाटी कहा कि अधिकांश डाक्टर मशीन लर्निंग पर भरोसा करते हैं वह सक्षम और समर्थ डाक्टर बनने का सही रास्ता नहीं है। डाक्टर को खाई में मरीजों का इलाज करके ज्ञान अर्जित करना होगा। चिकित्सा संस्थानों की फैकल्टी की भी अपनी जिम्मेदारियां होती हैं कि वह मेडिकल छात्रों को प्रयोगात्मक ज्ञान दें ताकि वह अपने क्षेत्र में पारंगत हो सकें। एक सक्षम डाक्टर ही मरीजों की सुरक्षा का ध्यान रख सकता है क्योंकि चिकित्सीय पेशे में चूक की गुंजाइश नहीं होती छोटी सी गलती रोगी के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जिक्र करते हुए डॉ. गुलाटी ने बताया कि मौजूद समय में एआई का प्रयोग सभी क्षेत्रों में हो रहा है। चिकित्सा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। डाक्टर व आम आदमी यह मान रहा है कि एआई के आने से इलाज आसान हो जाएगा। ऐसा नहीं है एआई एक मशीन आधारित प्रक्रिया है। एआई कभी भी डॉक्टर की जगह नहीं ले सकता।